RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-011/2021-23

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 48, अंक : 3 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 2 मई, 2021

विक्रमी सम्वत् 2078, सृष्टि सम्वत् 1960853122

दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–48, अंक : 3, 29 अप्रैल-2 मई 2021 तदनुसार 20 वैशाख, सम्वत् 2078 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

E-mail : apspunjab2010@gmail.com ॐ ओ३म् ॐ दूरभाष : 0181-2292926, 0181-5062726

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.)

गुरुदत्त भवन, गुरुदत्त रोड, चौक किशनपुरा, जालन्धर - 144004

Arya Pratinidhi Sabha Punjab (Regd.)

Gurudutt Bhawan, Gurudutt Road, Chowk Kishanpura, Jalandhar-144004.

पत्रांक 176/21 दिनांक 26.04.2021

सेवा में

माननीय कैप्टन अमरेन्द्र सिंह जी
मुख्यमंत्री-पंजाब सरकार
मुख्यमंत्री कार्यालय, कमरा नम्बर 1, द्वितीय तल
पंजाब सिविल सचिवालय, सैक्टर 1- चण्डीगढ़-160001

विषय: **आर्य समाज मंदिरों में कोरोना वैक्सिनेशन सैन्टर बनाने हेतु।**

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

जैसा कि आप जानते ही हैं कि आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही देश और समाज सेवा के लिये सदैव तत्पर रहा है। फिर चाहे वह कोई भी दैवीय आपदा हो या मानव जनित युद्ध आदि। ऐसे ही आज के समय में यह कोरोना महामारी सम्पूर्ण विश्व में पैर पसार चुकी है और इसकी दूसरी लहर ने सम्पूर्ण भारत सहित पंजाब में भी कोहराम मचा रखा है। आर्य समाज इस महामारी के समय में भी अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्र सेवा को नहीं भूला है। आर्य समाज के कार्यकर्त्ता गत वर्ष में भी और इस वर्ष भी नागरिकों की सेवाओं के लिये कृत संकल्पित है।

वर्तमान में जहां एक ओर कोरोना से प्रभावित लोगों की संख्या में जबरदस्त बढ़ौत्तरी हो रही है वहां वैक्सीनेशन का कार्य भी जारी है। किन्तु दोनों कार्य एक ही स्थान पर होना कहीं न कहीं संक्रमितों की संख्या में वृद्धि का कारण हो सकता है।

अत: आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पंजाब में स्थित अपने 100 के लगभग आर्य समाज मंदिरों को कोरोना वैक्सीनेशन सैंटर के लिये उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। आप जहां जिस भी क्षेत्र में चाहेंगे वहां आर्य समाज अपने मंदिरों को आधारभूत सुविधाओं के साथ सेवा के लिये समर्पित करने के लिये तत्पर है। जिससे पंजाब में अस्पतालों का उपयोग केवल उपचार के लिये ही हो और टीकाकरण का कार्य अन्यत्र स्थानों पर चलता रहे। वैक्सीनेशन का कार्य भी कोरोना की चैन को रोकने में कारगर हो सकता है।

अत: आप से निवेदन है कि आप पंजाब में युद्ध स्तर पर टीकाकरण/ वैक्सीनेशन के कार्य को आगे बढ़ाएं। आर्य समाज इस कार्य में सरकार के कंधे से कंधा मिला कर चलने और सेवा देने के लिये अपने भवनों को राष्ट्र सेवा में समर्पित करता है। कृपया आर्य समाज को इस महामारी के समय में सेवा करने का मौका प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,

सुदर्शन शर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्यों का मूल निवास स्थान

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटा, (राजस्थान)

आर्य लोग जिन्होंने वैदिक सभ्यता को जन्म दिया, वे किस देश के मूल निवासी थे, यह प्रश्न सर्वप्रथम सन् 1786 ई. में फिलिप्यो सेसेटी ने उठाया। वह यूरोप का निवासी था तथा व्यापार के सिलसिले में 5 वर्ष तक गोवा में रहा था। पहले उसने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया और फिर संस्कृत एवं यूरोप की अन्य भाषाओं के शब्दों में समानता देख कर यह विचार बनाया कि आर्य लोग प्रारम्भ में यूरोप के निवासी थे। उसकी इस धारणा को शक्ति प्रदान करने वाला बंगाल का मुख्य न्यायाधीश विलियम जोन्स बना। उसने 1786 ई. में Assiatic Society of Bengal के समक्ष इस आशय का एक पत्र पढ़ा और इस धारणा के सम्बन्ध में निम्न तर्क दिये-

(1) आज ईक ईण्डो-यूरोपीय भाषा परिवार के शब्द और मुहावरे जितने यूरोप की भाषाओं में विद्यमान हैं उतने एशिया की भाषाओं में नहीं है। उदाहरणार्थ द्यौ' शब्द संस्कृत का है परन्तु यह यूरोप की विभिन्न भाषाओं में विद्यमान है-लैटिन में 'दुआ' आइरिश में 'दो' लिथूनियन में 'दु' तथा अंग्रेजी में 'टू' इससे सिद्ध होता है कि संभवत: यूरोप का कोई भाग आर्यों का आदि देश रहा होगा।

(2) यूरोप की लिथूनियन भाषा ही समस्त इण्डो-यूरोपियन भाषा परिवार में अत्याधिक परिष्कृत है और इसी कारण वह प्राचीनतम प्रतीत होती है अत: आर्यों का मूल निवास स्थान लिथूनिया या उसके आस-पास का प्रदेश रहा होगा।

प्रश्न हुआ कि वह मूल प्रदेश कौन सा है? तो कहा गया है कि हंगरी, जर्मनी अथवा दक्षिणी रूस यह प्रदेश हो सकता है।

हंगरी को आर्यों का मूल स्थान मानने वाले प्रो. गाइल्स है। उन्होंने अपने मत के पक्ष में निम्न तर्क प्रस्तुत किये-

(1) आर्यों को जिन वृक्षों का ज्ञान था वो शीतोष्ण कटिबन्ध में होते हैं।

(2) जर्मनी के कुछ भागों में हुई खुदाई में मिट्टी के भाण्डे मिले हैं जो आर्यों की ही कृति होनी चाहिए।

(3) ये विशेषताएं स्केन्डे-निवियन्स में भी पाई जाती हैं इसलिए पेन्का के समर्थन में हर्ट ने भी इसे आर्यों का मूल निवास स्थान माना है।

(4) कुछ विद्वानों ने पुरातत्व के आधार पर बाल्टिक समुद्रतट को आर्यों का मूल निवास स्थान माना है।

मीमांसा-शरीर रचना अथवा बालों के आधार पर जर्मनी अथवा बाल्टिक समुद्र तट (स्केन्डे-निवियन्स) को आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं माना जा सकता है। पातंजलि ने भूरे बालों का होना ब्राह्मणों का स्वाभाविक गुण बताया है। रोम में भूरे बालों का होना एक कौतुक का विषय माना जाता है। इसलिए वहां विद्वानों का ध्यान प्लूटार्क और सूला पर गया। इसी तरह पाषाण कालीन सामग्री अथवा एक दो मृद भाण्ड मिल जाना ही आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं बना सकता है।

(स) दक्षिणी रूस-नेहरिंग, ब्रेन्डेस्टीन तथा गार्डन चाइल्ड ने मत रखा कि दक्षिणी रूस आर्यों का मूल निवास स्थान है। उनके तर्क है-

(1) यूकराइन में 3000 बी.सी. के कुछ भाण्ड मिले हैं। नेहरिंग का कहना है कि वे भाण्ड आर्यों की ही कृति हैं।

(2) आर्यों का मूल निवास स्थान उनके वनस्पति और पशु-पक्षियों के ज्ञान के आधार पर शीतोष्ण कटि बन्ध बताया जाता है इसलिए आर्य दक्षिणी रूस के ही निवासी रहे हैं क्योंकि यह स्थान शीतोष्ण कटि बन्ध में ही है।

मीमांसा-नेहरिंग और गार्डन द्वारा प्रतिपादित दक्षिणी रूस का सिद्धांत भी न्याय संगत प्रतीत नहीं होता है। प्रथम तो स्टेप्स में वे भौगोलिक परिस्थितियां उपलब्ध नहीं है जो आर्यों के लिए आवश्यक बताई गई हैं चाहे स्टेप्स शीतोष्ण कटिबन्ध में ही क्यों न हो। दूसरे भाषा विज्ञान के आधार पर स्टेप्स आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं हो सकता। इन्हीं कारणों से प्रो. गाइल्स ने इस धारणा का विरोध किया है। वास्तव में यूरोप को आर्यों का मूल निवास मानने में उनकी यूरोपीय भावना ही मुख्य है।

मध्य एशिया-इस मत का प्रतिपादन सर्व प्रथम सन् 1820 ई. में जे.जे. रहोड ने किया फिर सन् 1859 ई. में मैक्समूलर ने इस का समर्थन किया। एडवर्ड मेयर ने इस धारणा का समर्थन करते हुए पामीर के पठार को आर्यों का मूल निवास स्थान बताया। कीथ ने भी इस मत का समर्थन किया।

भारतीय विद्वानों में यदुनाथ सरकार तथा द्वारका प्रसाद मिश्र ने भी इस धारणा को स्वीकार किया। इस धारणा के समर्थन में निम्न तर्क दिए गए-

(1) मैक्स मूलर ने कहा कि आर्य संस्कृति का बोध वेद तथा जिन्द अवेस्था से होता है। अत: स्वाभाविक है कि आर्यों का मूल निवास स्थान भारत के समीप ही कहीं होगा क्योंकि वेद और जिन्द अवेस्था में पर्याप्त साम्य है। यह साम्य इस बात का प्रतीक है कि इन दोनों देशों भारत तथा ईरान के निवासी कभी बहुत दिनों तक साथ रहे होंगे। कालान्तर में किसी कारण विशेष से उन्होंने स्थान परिवर्तन किया होगा। वे लोग वहां से तीन जत्थों के रूप में रवाना हुए होंगे। उनमें से एक जत्था भारत, एक यूरोप होगा और कुछ लोग ईरान में ही बस गए होंगे।

(2) मैक्समूलर ने भी प्रो. गाइल्स की तरह भाषा विज्ञान का सहारा लिया है। उनका कहना है कि एशिया के दक्षिण पूर्व और यूरोप के उत्तर पश्चिम में दो भाषाओं की श्रेणी का प्रभाव है और मध्य एशिया में आकर ये एक दूसरे को प्रभावित करती है।

(3) इन विद्वानों की धारणा है कि यही स्थान (मध्य एशिया) सभ्य जीवन का प्राचीनतम केन्द्र रहा है।

(4) सभी भाषाओं में पाये जाने वाले शब्दों के अध्ययन के आधार पर भी मध्य एशिया ही आर्यों का मूल निवास स्थान लगता है।

(5) मध्य एशिया में बोगाज कोई में कुछ सन्धि पत्रों के अभिलेख प्राप्त हुए हैं इन अभिलेखों में वैदिक देवताओं (इन्द्र, वरूण मित्र) के रूपान्तरित नाम प्राप्त हुए है।

(6) मिश्र में एल अमनी नामक स्थान पर प्राप्त मिट्टी के कुछ अंश इस बात के प्रतीक हैं कि ईरानी तथा भारतीय कुछ समय तक ईरान में साथ रहे थे।

(7) एडवर्ड मेयर ने इस स्थान का समर्थन करते हुए पामीर के पठार के आस-पास आर्यों का मूल स्थान तय किया। उसने अपने समर्थन के पक्ष में लिखा है कि यूरोपीय भाषाओं में हिट्टाइट भाषा प्राचीनतम है। सन् 1900 बी.सी. में केपडोशिया में रहने वाले हिट्टी भाषी थे और यह प्रदेश मध्य एशिया के समीप ही है।

(8) बैन्डेस्टीन ने भी भाषा विज्ञान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि इन्डो-यूरोपियन आर्य आरम्भ में एक स्थान पर लगातार सम्मिलित रूप से रहते थे और उन्होंने यूराल पर्वत का दक्षिणी भाग निर्धारित किया है। उनका कहना है कि यही से भारत तथा ईरान में गए थे।

मीमांसा-आर्य प्रथम मध्य एशिया में बसते थे और वहां से वे ईरान भारत तथा यूरोप में पहुंचे। कुछ इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं है। उनका कहना है कि आर्यों के प्रदेश की भूमि अत्यन्त उर्वरा तथा जल से परिपूर्ण थी परन्तु मध्य एशिया में ये दोनों बातें ही नहीं मिलती है। दूसरे आर्यों के आदि ग्रन्थ वेद में भी मध्य एशिया का उल्लेख नहीं मिलता है। तीसरे इस धारणा के पुष्टि कर्त्ता यह बताने का प्रयास भी नहीं करते कि आर्य लोग अपने मूल निवास स्थान में इतनी कम संख्या में क्यों रहे?

(3) उत्तरी ध्रुव-इस धारणा के प्रतिपादक बाल गंगाधर तिलक थे। उन्होंने अपनी धारणा की पुष्टि में निम्न आधारों पर की है।

(1) ऋग्वेद में एक सूक्त है जिसमें दीर्घकालीन उषा की स्तुति की गई है और यह दीर्घकालीन उषा उत्तरी ध्रुव में ही होती है।

(2) महाभारत में सुमेरू पर्वत का वर्णन करते हुए 6 मास का दिन और 6 मास की रात्रि का उल्लेख किया गया है जो उत्तरी ध्रुव पर ही संभव है।

(3) ऋग्वैदिक वर्णन में जगह-जगह ध्रुव का वर्णन मिलता है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर तिलक ने यह धारणा इतिहास प्रेमियों के सम्मुख रखी। उनका कहना कि 800 ई. पूर्व तक आर्य लोग उत्तरी ध्रुव पर ही रहे और जब वहां हिम प्रलय हुआ तो वे ईरान जाकर बस गए। उनके अनुसार हिम प्रलय के पूर्व उत्तरी ध्रुव की जलवायु अच्छी थी और आर्य लोग वहां अपने मनोनुकूल वनस्पतियां पैदा करते थे।

मीमांसा-तिलक ने अपने मत का प्रतिपादन केवल साहित्य के आधार पर किया है और साहित्यिक वर्णन में यह आवश्यक नहीं कि केवल देखे हुए स्थान का ही वर्णन किया जावे। दूसरी बात यह है कि यदि आर्य लोग उत्तरी ध्रुव के निवासी होते तो वे 'सप्त सैन्धव' को 'दैवकृत योनि' नहीं कहते। तिलक ने स्वयं उमेशचन्द्र विद्यारत्न के सामने स्वीकार किया कि उन्होंने मूल वेद नहीं पढ़े हैं केवल अंग्रेजों द्वारा किये गये वेद भाष्य पढ़े हैं। आमि मूल वेद अध्ययन करि नाई। 'आमि साहब अनुवाद पाठ करिछा छे।' (मानवेर आदि जन्म भूमि पृष्ठ 124) उत्तरी ध्रुव विषयक मान्यता के संबंध में तिलक ने लिखा है-It is clear that some ras was extracted and perified at nights in the arctic. इसका प्रत्याख्यान करते हुए नारायण भवानी पावगी ने अपने ग्रन्थ 'आर्य वर्त्तातीय आर्याची जन्मभूमि' में लिखा है-किन्तु उत्तरी ध्रुव में तो सोमलता होती ही नहीं सोमलता तो हिमालय पर्वत के एक भाग मुंजवान पर्वत पर होती है।

(4) आर्यों का आदि देश भारत-इतिहास कारों की एक श्रेणी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

26 अप्रैल जन्मदिवस पर विशेष...

असाधारण प्रतिभा के धनी-पं. गुरूदत्त विद्यार्थी

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुलतान शहर में लाला रामकृष्ण के यहां हुआ। उनके पिता श्री रामकृष्ण फारसी एवं उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् थे। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने अपने विद्यार्थी जीवन में शानदार सफलताएं प्राप्त की, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने उनके जीवन को पलट दिया। 29 जून 1880 को उन्होंने आर्य समाज में प्रवेश किया। गुरूदत्त के व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था कि जो उन्हें मिलता था उनका मित्र बन जाता था। आर्य समाज में थोड़े ही समय में उनका स्थान बन गया। लोग उन्हें यंग फिलास्पर कहने लगे। मैट्रिक की परीक्षा पास करके उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरूदत्त विद्यार्थी लाहौर के गवर्नमैंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए। बहुत सी अंग्रेजी किताबें पढ़ने के कारण उनका झुकाव नास्तिकता की ओर होने लग गया था।

जब 1883 में स्वामी दयानन्द के रूग्ण होने का समाचार आर्य समाज लाहौर में पहुचा तो समाज के अधिकारियों ने लाला जीवनदास और पं. गुरूदत्त को स्वामी जी की सेवा सुश्रूषा के लिए भेजने का निश्चय किया। 19 वर्ष के इस बालक को दयानन्द के जीवन का अन्तिम दृश्य हिलाकर रख गया। उन्होंने देखा कि किस प्रकार एक आस्तिक एवं लोकहित के लिए समर्पित महापुरूष अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त करने के पश्चात किस निर्भीकता के साथ अपनी आत्मा को सर्वात्मा से मिलाने के लिए तत्पर है। दयानन्द के इस निर्वाण के अभूतपूर्व दृश्य ने पं. गुरूदत्त के मन और मस्तिष्क पर अनोखा प्रभाव डाला। जो नास्तिकता के अंकुर गुरूदत्त के हृदय में प्रस्फुटित हो रहे थे वे सभी महर्षि दयानन्द के परमात्मा के प्रति असीम विश्वास ने अंकुरित होने से पहले ही नष्ट कर दिए। पं. गुरूदत्त को निश्चय हो गया कि कोई शक्ति है जिसके सहारे इतनी असहनीय व्याधि होने पर भी महर्षि दयानन्द शान्त अवस्था में बैठे हैं। महर्षि दयानन्द ने उन्हें कोई उपदेश नहीं दिया, शंका समाधान नहीं किया, परमात्मा के विषय में तर्क वितर्क नहीं किया। परन्तु उन्होंने अपने आस्तिक जीवन से ही गुरूदत्त के अन्दर आस्तिकता के बीज बो दिए।

महर्षि दयानन्द के वेद प्रतिपादित सत्यज्ञान मूलक मन्तव्यों, सिद्धान्तों, शिक्षाओं और विचारों को जिस खूबी के साथ मुनिवर गुरूदत्त ने समझा, जीवन में ढाला और प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य चकित एवं आचम्भित हो जाता है। जीवन में केवल एक बार और वह भी परलोक गमन करते हुए ईश के सच्चे उपासक, योगी, यति तपस्वी दयानन्द को उन्होंने देखा था। वार्तालाप करने या शंका समाधान करने अथवा महर्षि के संसर्ग में रहकर उनके सदुपदेशों से लाभ उठाने का तो गुरूदत्त जी को समय नहीं मिला परन्तु कमाल यह है कि 19 वर्ष का यह नवयुवक महर्षि के प्राणोत्सर्ग के अद्भुत दृश्य को देखने मात्र से जो कुछ प्राप्त कर पाया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। परलोक सिधार रहे ऋषि ने इन्हें एक दृष्टि देख लिया और ये कुछ के कुछ बन गए। गुरूदत्त ने ऋषि का संदेश अपने हृदय पटल पर अंकित कर लिया और समझा कि इसके प्रचार का उत्तरदायित्व मुझ पर ही है।

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ विद्या, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, शरीर विज्ञान आदि विविध विद्याओं में पारंगत इस नवयुवक को किस शक्ति ने आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया? पाश्चात्यों की नास्तिकता बढ़ाने वाली निकम्मी शिक्षा और विचारधारा से पृथक कर सच्ची आस्तिकता का पाठ किसने पढ़ाया? संस्कृत ही पूर्ण और वैज्ञानिक भाषा है, यह ध्रुव सत्य गुरूदत्त को किसकी कृपा से ज्ञात हुआ? क्या किसी शास्त्रार्थ में पराजित होकर उसने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया? या किसी की तर्कणा शक्ति से पराभूत होकर उसे अपना मार्ग बदलना पड़ा? नहीं बिल्कुल नहीं। कारण के बिना कोई कार्य नहीं हुआ करता। गुरूदत्त के जीवन की चिन्तनधारा में परिवर्तन भी बिना कारण कैसे हो सकता था। महान् संस्कारी आत्मा गुरूदत्त को एक दूसरी विलक्षण प्रभु भक्ति में रंगी दयानन्द की आत्मा ने बिना कुछ कहे ही अपने समान आस्तिकता के रंग में रंग डाला। महर्षि दयानन्द का प्राणोत्सर्ग दृश्य ने गुरूदत्त का जीवन, चिन्तन, दृष्टिकोण सभी कुछ बदल दिया।

एक बार किसी ने पं. गुरूदत्त विद्यार्थी से कहा कि आपको स्वामी जी के योगी होने के बारे में अनेक बातों का ज्ञान है। आप उनका जीवन चरित्र क्यों नहीं लिखते? अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रयास कर रहा हूं। प्रश्नकर्ता ने पुनः पूछा- जीवन चरित्र कब छप जाएगा? गुरूदत्त बोले आप कागज पर लिखा जीवन चरित्र समझ रहे हैं, मेरे विचार में महर्षि का जीवन चरित्र अपनी पूर्ण आयु में लिखना चाहिए और इसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

वेद की सत्यता पर गुरूदत्त की ऐसी दृढ़ आस्था थी कि जब कभी किसी वैज्ञानिक के कथित आविष्कार की कोई उनसे चर्चा करता तो वे झट से उत्तर देते कि हां भाई वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट आ गया है। सत्य पूर्ण है और प्रभु प्रदत्त वेद ज्ञान तथा सृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैज्ञानिक को जब जितना बोध होता है उतना वह असत्य से दूर होकर सत्य के निकट आ जाता है। बस यही आविष्कार है, इससे आगे कुछ नहीं। अपने ऐसे ही पवित्र और सत्य ज्ञान मूलक विचारों को दिसम्बर 1885 में लाहौर आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर दिए गए अपने भाषण में गुरूदत्त जी ने व्यक्त करते हुए कहा था-

आधुनिक विज्ञान चाहे उसमें कितने ही गुण क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालता। वह मनुष्य की आत्मा में आन्दोलन पैदा करने वाले सब से महान् और कठिन प्रश्न मनुष्य जाति के आदि मूल और इसके अन्तिम भाग्य के हल करने में कुछ भी सहायता नहीं करता। आधुनिक विज्ञान चाहे प्रत्येक नाड़ी और हड्डी को चीर ड़ाले और लहू की बूंद की अतीव सूक्ष्म दर्शक यन्त्र द्वारा जो सम्भवतः उसे मिल सकता है, बड़ी सूक्ष्म परीक्षा कर ले, पर इस प्रश्न पर उससे कुछ भी नहीं बन पड़ता कि वह जीवन के रहस्य को खोल नहीं सकता। चाहे शताब्दियों तक चीर फाड़ और परीक्षण करता रहे। जीवन की समस्या वेदों की सहायता के बिना हल नहीं की जा सकती। वही केवल इस अद्भुत रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं और उन्हीं की ओर वैज्ञानिक लोगों को अन्त में आना पड़ेगा।

इस प्रतिभाशाली वेद मनीषी, तपस्वी विद्वान् को पूरे 26 वर्ष ही जन सेवा का अवसर मिल पाया परन्तु इस स्वल्प जीवन में ही उसने अमित यश और कीर्ति का अर्जन कर लिया। पं. चमूपति जी ने ठीक ही लिखा था कि-

यदि इनकी आयु कुछ लम्बी होती तो इनके द्वारा न जाने क्या-क्या पांडित्य के, विकास के, तर्क के, आध्यात्मिक अनुभूति के अमूल्य रत्न केवल आर्य समाज को ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण मानव संसार को हस्तगत होते। इस अपरिपक्व अवस्था में इनके लिखे हुए लघु लेख तथा पुस्तिकाएं ही इनके असीम पांडित्य के बीच ही में रूक गए प्रवाह के अकाट्य प्रमाण हैं। गुरूदत्त केवल पंडित ही न था, वह सच्चा प्रतिभाशाली ऋषि पुत्र था। उसे न धन की परवाह थी और न जन की। सच की वेदि पर उसने अपना सुख, सम्पत्ति और अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी असाधारण प्रतिभा के धनी थे। इतनी कम आयु में उन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया था उससे उनकी मेधा बुद्धि का ज्ञान हो जाता है। ऐसे असाधारण प्रतिभा के स्वामी और महर्षि दयानन्द के सच्चे शिष्य को 26 अप्रैल को उनके जन्मदिवस पर याद करते हुए उनके द्वारा आर्य समाज के लिए किए गए कार्यों को याद करें। उनके जन्मदिवस पर आर्य समाज की उन्नति के लिए प्रण लें, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

प्रेम कुमार
संपादक एवं सभा महामन्त्री

कोरोना त्रासदी और सद्साहित्य की भूमिका

ले.-डॉ. निर्मल कौशिक 163, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड़, फरीदकोट (पं.)

आज पूरा विश्व कोरोना त्रासदी से भयभीत है। इस भयानक महामारी ने विश्व की महाशक्तियों तक को अपनी लपेट में ले लिया है। संसार भर के वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने अपनी पूरी ताकत औषधियों के अनुसन्धान में लगा दी है मगर अभी तक किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंच सके हैं। भारतीय चिकित्सकों और वैज्ञानिकों ने कुछ आयुर्वेदीय औषधियां अवश्य तैयार कर ली है मगर वे भी मनुष्य की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने व बीमारी से बचाव के लिए है। इस कोरोना महामारी के संक्रमित होने के बाद जीवन रक्षक औषधि अभी तक विश्व भर में उपलब्ध नहीं हो सकी है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसे प्राकृतिक प्रकोप अथवा कोई सशक्त अभिश्राप भी कहा जा सकता है। अभी तक तो वैज्ञानिक यह भी नहीं बता पाए कि यह कोरोना का संक्रमण कृत्रिम (मानव निर्मित) है अथवा प्राकृतिक यह एक अलग विषय है। इसी विषय पर पूरा विश्व दो खेमों में बंटा हुआ है। पहली समस्या तो कोरोना महामारी से निपटने की है।

कोरोना त्रासदी के कारण पूरा मानव जीवन अस्त व्यस्त हो गया है। बड़ी-2 योजनाएं धरी की धरी रह गई है। विश्व भर की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है। शिक्षा पटरी से उत्तर गई है। बच्चों का भविष्य धूमिल दिखने लगा है। बेरोजगारी की समस्या ने और भयानक रूप धारण कर लिया है। कईयों के रोजगार छिन गए है। घरों में कैद सभी परिवार के लोग तनाव और दबाव में जी रहे है। खाने पीने की वस्तुएं लाकडाऊन के कारण समय पर उपलब्ध नहीं होती है। सब्जियां और फल अगले दिन धो-2 कर खाने पड़ते हैं। राशन घर में भेजने वाले दुकानदार खराब सामान महंगे भावों में बेच रहे है। मरीजों को समय पर औषधि उपलब्ध नहीं हो रही है। कुल मिला कर पूरा मानव जीवन अस्त व्यस्त हो गया है। मंहगाई आसमान को छू रही है। कुछ छोटे उद्योग तो बन्द हो गए हैं। छोटे व्यापारी, खोमचे वाले, रेहड़ी वाले तो रोटी भी दो वक्त नहीं खा पाते। मध्यम वर्ग तो बर्बाद ही हो गया है। कुछ व्यापार बन्द हो गए है। ऐसे में कौन व्यक्ति है जो स्वयं को इस संकट में सुरक्षित रख सकता है। बाहर तो निकलना पड़ेगा ही। औषधि सब्जी, फल, राशन, पैट्रोल यह सब तो मूलभूत आवश्यकताएँ है। ऊपर मंहगाई इतनी बढ़ गई है। कि पूछो मत। कुछ की तो आमदन भी समाप्त हो चुकी है। कोरोना के नाम पर लूट घसूट भी बहुत हो रही है। मजबूर लोगों का नाजायज़ लाभ उठाया जा रहा है। अस्पतालों में ओ.पी.डी. और इलाज बन्द है। प्राईवेट अस्पताल इस अवसर का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। करें तो क्या करें।

इन्हीं समस्याओं से जूझते-2 सब लोग चिन्ता निमग्न हैं। जीवन मानों रूक सा गया है। जीवन में नीरसता बढ़ने लगी है। टी.वी. और मोबाइल भी सब मुंह चिढ़ाने लगे है। घर में जो अखबार मैगजीन आते थे हमने बन्द कर दिए। कहते हैं इनमें भी कोरोना का जीवाणु फैलता हैं। लोगों ने सोशल मीडिया की ओर अपना मुंह किया तो उसमें अफवाहें और झूठे किस्से पोस्ट किए जाने लगे। बड़ी भयानक खबरें और दृश्य देखने से मन विचलित सा होने लगा। मैंने अपने एक मित्र को फोन पर सम्पर्क किया तो उसने बड़ी अच्छी बात बताई। उसने कहा मैंने टी.वी. और मोबाइल देखना छोड़ दिया है। मैं अपने शैलफ से रोज एक किताब निकाल कर पढ़ता हूं उससे अच्छी-2 बातें अपनी डायरी पर नोट करता हूँ।

संस्कृत में काव्य अथवा साहित्य के विषय में एक अत्यन्त सुन्दर उक्ति है।

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् दुर्जने व्यसने च मूर्खाणाम् निद्रया कलहेन वा।

अर्थात् बुद्धिमानों का समय काव्य (साहित्य) अथवा शास्त्रों के साथ (अध्ययन करके) सुखपूर्वक आनन्दपूर्वक बीतता है मगर दुर्जनों का व्यसन (बुरे काम), निद्रा में अथवा झगड़ा करने में बीतता है। अर्थात् अपने रिक्त समय का सदुपयोग शास्त्र अथवा साहित्य के साथ बिताने में ही बुद्धिमत्ता है। यही कारण है कि ग्रन्थ अथवा साहित्य पढ़ने वाले व्यक्ति अधिक विवेकी होते है। हम भले ही अपने से पूर्व पीढ़ी को आधुनिक न समझे मगर उनका अध्ययन अत्यन्त गहन होने के कारण वे बुद्धिमान और ज्ञानवान अवश्य थे। साहित्य मानव जीवन को सकारात्मक चिन्तन और भावनात्मक सौहार्द्र के प्रति उन्मुख करता है। संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान और कवि श्रेष्ठ भर्तृहरि जी ने क्या खूब कहा है।

साहित्य संगीत कला विहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः
तृणं न खाद्न्नपि जीवमानं
तद् भागधेय परमं पशूनाम्

अर्थात् साहित्य संगीत और कला से रहित मनुष्य बिना सींग और पूंछ के पशु ही है तो पशुओं का सौभाग्य ही है कि ऐसे मनुष्य रूपी पशु घास नहीं खाते वरना पशु तो बेचारे भूखे ही मर जाते। योग और ध्यान की तरह भी गायत्री महामन्त्र का निरन्तर उच्च स्वर में शुद्ध उच्चारण करने से अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है चारों ओर ध्वनि तंरगों के फैलने से नकारात्मक ऊर्जा नष्ट होती है। यह वैज्ञानिक तथ्य है। संस्कृत के मन्त्रों का उच्च स्वर में उच्चारण करने से स्वतः अनुलोम-विलोम होता है। इसीलिए संस्कृत को एक वैज्ञानिक भाषा भी कहा गया है। क्योंकि संस्कृत एक महत्त्वपूर्ण और लाभदायक व्यवस्था के रूप में प्रत्येक वर्ण के निश्चित उच्चारण स्थान के साथ देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इसके अनुस्वार (अं) और विसर्ग (:) हमारी श्वास प्रणाली को स्वस्थ रखने में सहायक होते है। संस्कृत भाषा में अधिकाशतः पुल्लिंग शब्द विर्सगान्त (:) होते है यथाः रामः बालकः छात्रः हरे, भानु आदि तथा नपुसंकलिगं के शब्द अधिकांशतः अनुस्वारान्त होते है यथा जल फल, पुष्प, वन इत्यादि। विसर्ग का उच्चारण करते समय श्वास को बाहर निकाला जाता है कपाल भाति की क्रिया में भी हम श्वास को बाहर निकालते है। जो लाभ हमें कपाल भाति की क्रिया से मिलता वह विसर्ग के उच्चारण से भी मिलता है। इस प्रकार अनुस्वार का उच्चारण और भ्रामरी प्राणायाम् में श्वास को नासिका से छोड़ते हुए श्वास की गुंजन ध्वनि से क्रिया होती है। इस प्रकार संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का उच्च स्वर में अध्ययन करने से उच्चारण मात्र से ही अनुलोम विलोम स्वतः हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत के वेद मन्त्रों का उच्चारण उच्च स्वर में करने वाले हमारे ऋषि मुनि हजारों वर्षों तक जीवित रहते थे। कहा जाता है कि एक प्रसिद्ध कवि 'मयूर' कुष्ठ रोग से ग्रसित हो गए। तब उन्हें किसी ने बताया कि आप सूर्योपासना कीजिए। उन्होंने स्वयं सूर्य की स्तुति की और नियमित रूप से उच्च स्वर में आराधना करते रहने से थोड़े ही समय में उनका कुष्ठ रोग ठीक हो गया बाद में उन्होंने इस स्तुति को सूर्य शतक के रूप में लिखा। कहा जाता है कि 'सूर्य शतक' का पाठ करने से अनेक रोग दूर हो जाते है। हमारे पूर्वज महान सन्तों, धर्माचार्यों, दार्शनिकों व कवियों ने हिन्दी और संस्कृत में ही नहीं अपितु भारत की प्रत्येक प्रान्तीय भाषाओं में ऐसा समृद्ध साहित्य रचा है कि मनुष्य अगर उसका आस्था और विश्वास के साथ अध्ययन करे तो कोरोना जैसी त्रासदी के संकटकाल में स्वयं को ज्ञानवान्, आनन्ददायक, ऊर्जावान, आत्मबल वर्धक, निर्भय और सक्षम बना सकता है।

कोरोना के त्रासदी काल में हमने अनुभव किया है कि हम घर में बन्द रह कर अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या से अलग हो गए थे अपने समय से सब काम करने की आदत छूटने लगी थी मानसिक तनाव पैदा होने लगा था कुछ न कर पाने की विवशता, समय की बर्बादी, टी.वी. और मोबाइल पर निराशाजनक समाचार, मृत्यु के आंकड़े कोरोना के मरीजों की निरन्तर बढ़ती संख्या बार-2 सारा दिन पुनरावृत्ति से दिमाग़ ऊबने लगा था। सारा दिन लेटे रहना, खाना, पीना, सोना, गप्पे हांकना। भयानक खबरें सुनना यह सब रोज का काम हो गया था। कुछ दिन बाद मैंने पुरानी किताबें निकाली, कुछ कविताएं, निबन्ध, कहानियां पढ़ी। समय अच्छा बीतने लगा। कुछ कविताएं और आलेख मैंने भी लिखे। मुझे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

ईश्वर का स्कम्भ रूप व वेद

ले.-आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा-प्राचार्य-पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी-10

परमेश्वर अन्तरहित है, अनन्त है। जगत् का प्रत्येक पदार्थ उससे ही अभिव्याप्त है। अनन्त परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव भी अनन्त हैं। इस अनन्तता के कारण ईश्वर के अनन्त स्वरूपों में एक स्वरूप स्कम्भ भी है।

स्कम्भ व्युत्पत्ति व अर्थ

स्कम्भ शब्द **स्कभि प्रतिबन्धे** भ्वादिगणीय धातु से **घञ् प्रत्यय** द्वारा निष्पन्न होता है। **स्कम्भ** शब्द की व्युत्पत्ति है-

यः स्कम्भते प्रतिबध्नाति सः स्कम्भः।

अर्थात् जो प्रतिबन्धित करता है, व्यवस्था देता है, नियम में रखता है, वह स्कम्भ कहाता है।

तात्पर्य हुआ **प्रतिबन्ध**=आलम्ब, आधार, सहारा, थूणी, बांधने वाला, पदार्थों की अपने अपने नियम में रुकावट करने वाला, नियत व्यवस्था, स्थान में रखने वाला **स्कम्भ** होता है।

वैदिक वाङ्मय में स्कम्भ

निष्कर्षतः सर्वाधार का नाम स्कम्भ है। सर्वाधार परमेश्वर है। सम्पूर्ण जगत् के पदार्थों को अपनी अपनी व्यवस्था में रखने का कार्य ईश्वर ही करता है। **वेद, उपनिषद् दर्शन** आदि सम्पूर्ण **वैदिक वाङ्मय** में ईश्वर के इस **स्कम्भ**=सर्वाधार स्वरूप का भली भांति निर्देश है।'

अथर्ववेद में स्कम्भ

परमेश्वर के **स्कम्भ**=सर्वाधार स्वरूप का अथर्ववेद के १० वें काण्ड के ७वें सूक्त में तो अत्यन्त विस्तार से प्रतिपादन है। इस सूक्त में ४४ मन्त्र हैं। सूक्त के ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, २०, २२, ३६=१६ मन्त्रों की टेक **स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः** इस प्रकार की है। मन्त्रों की इस टेक में **कतमः** शब्द प्रयुक्त है, जो **किम्** शब्द एवं **सुखवाचक कः** शब्द से अतिशय अर्थ में **तमप् प्रत्यय** द्वारा सिद्ध होता है।

इस प्रकार इस टेक में प्रश्न भी है कि **वह स्कम्भ कौन है?** और यह निर्देश भी है कि **सर्वतः सुखदायी ईश्वर स्कम्भ है**=सर्वाधार है, वह सर्वाधार सुखस्वरूप है।

स्कम्भ की ज्येष्ठ ब्रह्म संज्ञा

स्कम्भ=सर्वाधार ईश्वर को अथर्ववेद के **१० वें काण्ड के, ७ वें सूक्त में ज्येष्ठ ब्रह्म** भी कहा है। ब्रह्म बड़े को कहते हैं। ईश्वर सबसे बड़ा है, अतः बड़े कहने से सम्पूर्ण जगत् को वह स्कम्भ ब्रह्म सबका धारण करता है, सबका आधार बनता है। जगत् के जड़, चेतन पदार्थों को उनकी अपनी अपनी नियत व्यवस्था में रोककर=थामकर रखता है। **स्कम्भ**=धारक शक्ति वाला ब्रह्म धारण न करे, तो अधर में लटके **सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र** आदि कभी निराधार टिके नहीं रह सकते।

ऋत= शाश्वत नियम, सत्य, श्रद्धा, तप आदि सभी कुछ स्कम्भ ब्रह्म में ही प्रतिष्ठित हैं। मन्त्र है-

यत्र तपः पराक्रम्य व्रतं धारयत्युत्तरम्।
ऋतं च यत्र श्रद्धा चापो ब्रह्म समाहिताः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।

अथर्व. १०।७।११।।

अर्थात-**यत्र**=जिस सामर्थ्य में, **तपः**=ज्ञानरूप तप **को, पराक्रम्य**=**पराक्रम**=चारों ओर से घेर के, **उत्तर व्रतम्**=उत्कृष्ट कर्म को, **धारयति**=धारण करता है, **यत्र**=जिसमें, **ऋतं**=शाश्वत नियम, **च**=और, **श्रद्धा**=सत्य व सत्य धारण करने का सामर्थ्य, **च**=और, **आपः**=प्रकृति, जल व आप्त जन एवं **ब्रह्म**=अन्न, **समाहिताः**=स्थित हैं, **तम्**=उसको, **स्कम्भं**=धारक, **ब्रूहि**=कहो, **सः**=वह, **स्वित्**=धारक, **ब्रूहि**=कहो, **कतमः एव**=सुखस्वरूप ही है।

मन्त्र का तात्पर्य है ज्ञान, उत्तम कर्म, नियम, सत्य, व्यापक पदार्थ, अन्न सभी **स्कम्भम्**=धारक ईश्वर में ही स्थित हैं। **लोक में तप, ज्ञानमय जिनका जीवन होता है, उनमें उत्तम कर्म करने के सामर्थ्य होते हैं। तपोमय, दीप्तियुक्त, ज्ञानपूर्ण जीवन उनका ही होता है, जो स्कम्भम्=सर्वाधार ईश्वर की उपासना करते हैं।**

स्कम्भ ब्रह्म में ही **अर्धमास, मास, ऋतु, वर्ष, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र लोक लोकान्तर स्थित हैं। स्कम्भ परमेश्वर ने ही कारण प्रकृति से अनेक प्रकार का यह जगत् बनाया है। स्कम्भ ब्रह्म का सिर वैश्वानर अग्नि** एवं **चक्षु**=**आंख अंगिरसः**=सूर्य की रश्मियाँ कही जाती हैं। **स्कम्भ का मुख ब्रह्म=वेदज्ञान या अथर्ववेद** है एवं उसकी **जिह्वा मधुकशा विद्या है। समुद्र** आदि जल स्रोत, **दिशायें** उस स्कम्भ के **नाड़ियों** के सदृश हैं।

तात्पर्य स्पष्ट है जगत् का प्रतिपदार्थ निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, परमेश्वर में ही समाहित है, स्थित है। सभी पदार्थ उस स्कम्भ=धारक की शक्ति से ही शक्तिमान् हैं, संप्रेरित हैं, स्वतः नहीं।

उपासकों की भूल

वेद के इतने स्पष्ट निर्देश, उपदेश होने पर भी उपासक जन भूल कर बैठते हैं। **ब्रह्म सबसे बड़ा स्कम्भ**=महान् धारक ईश्वर है, तो भी उस की उपासना न करके जड़ प्रकृति की उपासना में रत हो जाते हैं। प्रकृति उपासकों का निर्देशक **स्कम्भ** सूक्त का मन्त्र है-

असच्छाखां प्रतिष्ठन्ती परममिव जना विदुः।
उतो सन्मन्यन्तेवरे ये ते शाखामुपासते।।

अथर्व. १०।७।२१।।

अर्थात् **असत् शाखाम्**=उत्पत्ति रहित शाखा रूप, **प्रतिष्ठन्तीम्**=स्थिर कारण प्रकृति को, **जनाः**= बहुत से जन, **परमम् इव**=परम तत्त्व ईश्वर के सदृश, **विदुः**=जानने वाले होते हैं, **उत**=और **ये**=जो कारण प्रकृति को मानने वालों से अतिरिक्त, **अवरे**=इतर जन हैं, **ते**=वे **सत्**=प्रकृति से उत्पन्न पदार्थ रूप में स्थित जगत् को परम तत्त्व **मन्यन्ते**=मानते हैं, अन्यच्च प्रकृति के इन **शाखाम्**=कारण एवं अभिव्यक्त शाखारूप भेदों की, **उपासते**= उपासना में संलग्न रहते हैं।

मन्त्र से स्पष्ट है प्रकृति की **साम्यावस्था**=कारणरूपता, **विषमावस्था=उत्पत्तिरूपता दो अवस्थायें हैं। प्रकृति के इन दो स्वरूपों को ही उपासक परमतत्त्व मान बैठते हैं, कारण प्रकृति से उत्पन्न जगत में अभिव्याप्त परमतत्त्व ईश्वर को नहीं समझ पाते। इस नासझी से उनकी उपासना में भूल हो जाती है। जिस भूल से वे परम तत्त्व से सदा ही दूरातिदूर रहते हैं।**

परमतत्त्व ज्ञाता कौन?

परमतत्त्व ईश्वर को कौन जान पाते हैं? इसका निर्देश भी अथर्ववेद के इस सूक्त में निर्दिष्ट है। मन्त्र है-

ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेष्ठिनम्।
यो वेद परमेष्ठिनं यश्च वेद प्रजापतिम्।
ज्येष्ठं ये ब्राह्मणं विदुस्ते स्कम्भमनुसंविदुः।।

अथर्व, १०।७।१७।।

अर्थात् **ये**=जो, **पुरुषे**=शरीर रूप पुर में शयन करने वाले जीवात्मा में स्थित, **ब्रह्म**=ब्रह्म को, **विदुः**=जान लेते हैं, **ते**=वे ही, **परमेष्ठिनम्**=ईश्वर के परमेष्ठी **परम**=जीवात्मा में स्थित परमेश्वर को, **विदुः**=जान पाते हैं, **च**=और, **यः=जो, परमेष्ठिनम्**=जीवात्मा में स्थित ईश्वर के परमेष्ठी स्वरूप को, **वेद**=जानता है, **यः**=जो, **प्रजापतिम्**=प्रकृति से जन्य पदार्थों के पालक परमतत्त्व के प्रजापतिरूप को, **वेद**=जानता है, एवं **ये**=जो, **ब्राह्मणम्**=वेद ज्ञान के ज्ञाता, प्रदाता रूप, **ज्येष्ठम्**=सर्वोत्तम स्वरूप को, **विदुः**=पहचान लेते हैं, **ते**=वे ही, **स्कम्भम्**=स्कम्भ=धारक ब्रह्म के, **अनु**=स्वरूपानुकूल जो रूप है, उस स्वरूप को, **संविदुः**=भली प्रकार से, सम्यग् रूप से जानते हैं।

मन्त्र का तात्पर्य है **ईश्वर, जीव, प्रकृति**-ये तीन अनादि तत्त्व हैं। इन तीनों में ईश्वर सर्वव्यापक है। जीव व प्रकृति में ईश्वर व्यापक है। **ईश्वर की जीव सम्बन्धी व्यापकता, परमेष्ठी रूप है।** यहां **परमेष्ठी** शब्द गत **परम** शब्द **जीवात्मा का वाचक है,** क्योंकि जीव प्रकृति से परम है, अति उत्तम है। परमेश्वर की प्रकृति सम्बन्धी व्यापकता **प्रजापति** कही जाती है। प्रकृति से उत्पन्न हमारे शरीर व जगत् के अन्य सभी पदार्थों को ईश्वर उत्पन्न करता है, तो वे उत्पन्न पदार्थ **प्रजा** कहे जाते हैं, उनमें व्याप्त ईश्वर **प्रजापति** कहा जाता है। **परमेष्ठी** एवं **प्रजापति** स्वरूपों के अतिरिक्त ईश्वर का एक स्वरूप **ब्राह्मणम्=वेदज्ञ व** वेदज्ञान देने वाला रूप है। यह ईश्वर का **ब्राह्मणम्=वेदज्ञ व** वेदज्ञान प्रदान का स्वरूप **ज्येष्ठ** है। इस ज्येष्ठ स्वरूप को जानने के पश्चात् ही ईश्वर का **स्कम्भ**=धारक स्वरूप समझ आता है। जो ईश्वर के **ब्राह्मणम्** स्वरूप को जान लेता है, वह ही परमेश्वर का ज्ञाता होता है।

मन्त्र से स्पष्ट हुआ परमेश्वर को जानने के लिए इधर उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है, और न अपने को पीड़ित करने की आवश्यकता है। मन्त्रोक्त स्वरूपों को जानने से ईश्वर की प्राप्ति अवश्यम्भावी है।

ईश्वर प्राप्ति के अन्य उपाय अनर्थक

वर्तमान में ईश्वर प्राप्ति के लिए अनेकों क्रियायें, उपाय अपनाएँ जा रहे हैं। कोई **कावड़** उठाकर दौड़ रहा है, तो कोई **नंगे पैर** चल रहा है। बहुत से जन **सड़क पर लेटकर** अपनी शरीर की लम्बाई के अनुसार चिन्ह लगाकर इच्छित मन्दिर तक

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्य समाज फाजिलका का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज फाजिलका का निर्वाचन दिनांक 11 अप्रैल 2021 को श्री सतीश आर्य जी की अध्यक्षता में अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्व-सम्मति से वेद प्रकाश शास्त्री को अध्यक्ष, श्री ललित कीर्ति मलिक को मन्त्री तथा श्री अमित उबवेजा को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। साथ ही अध्यक्ष को शेष समस्त पदाधिकारियों का चयन करने का अधिकार दिया गया।

साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए अध्यक्ष जी ने अग्रलिखित अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों का चयन किया-

उपाध्यक्ष-सर्वश्री उमेश चन्द्र कुक्कड़, सत्य स्वरूप पुंछी एवं सुबोध नागपाल। उपमन्त्री-रवि अरोड़ा, सहकोषाध्यक्ष-कंवल किशोर ग्रोवर। प्रचार-मन्त्री-प्रेमनारायण विद्यार्थी, सहप्रचार मन्त्री-अनूप पुंछी, पुस्तकालयाध्यक्ष-राजेश चौहान एवं मुनि महाराज (शाम लाल आर्य), प्रभारी वस्तु भंडार-हरवंस लाल आर्य एवं सुभाष कपूर। परामर्शदाता-न्यायालीय-संजीव मक्कड़ एडवोकेट एवं विजय पुजारा सर्वपक्षीय-डॉ. नवदीप जसूजा, सतीश आर्य, मोहन स्वरूप विदानी, प्रदीप अरोड़ा। अन्तरंग सदस्य अरुण झांव, प्रफुल्ल नागपाल, अभय कुमार चावला, महिन्द्र प्रताप सचदेव, राजेश मुसरी, अरुण मिड्ढा।

-ललित कीर्ति मलिक मन्त्री

पृष्ठ 5 का शेष-ईश्वर का स्कम्भ रूप व वेद

पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं। कोई जन जल चढ़ा रहे हैं, कोई मिष्टान्न बांट रहे हैं। कोई सिर के बाल अर्पित कर रहे हैं, ये सब कार्य अनर्थक, निरर्थक हैं, परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय नहीं हैं।

ईश्वर की प्राप्ति तो वहीं होगी, जहाँ वह जीव स्वयं है। जीव शरीर में प्रतिबन्धित है। बाहर की प्रत्येक वस्तु में रहने वाला ईश्वर उस प्रतिबन्धित शरीर में भी है। तो ईश्वर जीव को वहाँ ही प्राप्त होगा। इसीलिए तो **स्कम्भ** सूक्त के मन्त्र में कहा-

ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेष्ठिनम्।।

अथर्व. १०।७।१७।।

इस प्रकार जीवों के शरीर में व्याप्त परमेष्ठी ब्रह्म को जानने के लोक के उपाय अनुचित उपाय हैं, वेदोक्त उपाय ही उचित उपाय हैं। वेदोक्त उचित उपाय तप करने, सत्य को धारण करने एवं उत्तम कर्म करने से अधिगत होते हैं, और परमेश्वर तक पहुचने में जीव समर्थ होते हैं।

पृष्ठ 4 का शेष-कोरोना त्रासदी और सद्साहित्य की भूमिका

लगा कि कोरोना त्रासदी को एक त्रासदी के रूप में जीने की अपेक्षा कुछ सार्थक और सकारात्मक काम करके समय का लाभ उठाया जाए। ऐसा खाली समय तो आज तक कभी नसीब नहीं हुआ। सेवानिवृत्ति के बाद भी मैंने अपने आपको व्यस्त ही रखा था। मगर यह जबरदस्ती की फुर्सत पहली बार मिली थी। पहली बार मुझे अनुभव हुआ कि यह साहित्य भी क्या काम की चीज़ है। इन पुस्तकों ने तो मेरी जिन्दगी बदल दी जो पुस्तकें केवल अलमारी का श्रृंगार थी आज कोरोना त्रासदी में मेरी निराशा और हताशा की उद्धारक और तारक सिद्ध हुई। ऐसे ही फुर्सत के पलों का सदुपयोग करने के लिए अगर हम अपने-घर में पड़ी पुरानी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, ग्रन्थों आदि को निकाल कर अध्ययन करे वो हमें बहुत कुछ गुप्त खजाना जैसा मिलेगा समय को सार्थक करने के साथ-2 ज्ञान वृद्धि भी होगी और मनोरंजन भी। इस कोरोना त्रासदी के भयानक सपने जैसे दौर में साहित्य हमारी पीड़ा को कम करने में, हमारे ही घर में उपेक्षित सद्साहित्य हमारे सुखद पलों को पुनः लौटाने में और अपने अन्दर विद्यमान इच्छा शक्ति को पुनः जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अतः इस कोरोना त्रासदी से उबरने के लिए अपनी आत्मशक्ति और इच्छा शक्ति को सकारात्मक ऊर्जा के रूप में विकसित करने वाली साहित्यिक निधि का सदुपयोग करें। इस महामारी से लड़ने के लिए शारीरिक क्षमता के साथ-2 आत्मिक इच्छा शक्ति और बौद्धिक शक्ति का विकास भी आवश्यक है। जो केवल सद्साहित्य ही प्रदान कर सकता है।

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते।

आप सभी जानते ही है कि सम्पूर्ण विश्व के साथ साथ भारत भी आज एक वैश्विक महामारी कोरोना से जूझ रहा है। दिन प्रतिदिन नये-नये वेरियंट और नये-नये स्ट्रेन आ रहे हैं और इस महामारी को और अधिक भयंकर रूप दे रहे हैं। कोरोना की दूसरी लहर ने सम्पूर्ण भारत सहित पंजाब में भी कोहराम मचा रखा है। आर्य समाज इस महामारी के समय में भी अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्र सेवा को नहीं भुला है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पंजाब सरकार से आग्रह किया है कि इस महामारी के समय में टीकाकरण/ वैक्सीनेशन के लिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों के भवनों का प्रयोग कर सकते हैं। इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों के मान्य प्रधान एवं मान्य मंत्री से निवेदन है कि वह अपने अपने शहर में सरकारी अधिकारियों से मिल कर अपनी अपनी आर्य समाज में टीकाकरण/ वैक्सीनेशन का कार्य आर्य समाज के भवनों में करने की अनुमति प्रदान करें और उन्हें अपना पूरा-पूरा सहयोग दें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
सुदर्शन शर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कोरोना वैक्सीन का कैम्प लगाया

आर्य माडल सी.सै.स्कूल बठिंडा में स्वास्थ्य विभाग बठिंडा की तरफ से कोरोना वैक्सीन का एक कैम्प लगाया गया जिसमें 150 से अधिक लोगों ने कोरोना का टीका लगवाया। इस मौके पर आर्य समाज एवं आर्य माडल सी.सै.स्कूल के प्रधान श्री अश्विनी मोंगा जी ने आए हुये मेहमानों को सम्मानित करते हुये बतलाया कि कोरोना का टीका बिल्कुल सुरक्षित है। इससे घबराने वाली कोई बात नहीं है। अफवाहों पर ध्यान न देकर सभी को कोरोना वैक्सीन का टीका लगवाना चाहिये। कोरोना जैसी महामारी से बचने के लिये यह टीका बेहद मददगार साबित होगा। स्कूल की तरफ से डाक्टरों एवं अन्य स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्कूल प्रबन्धक समिति के वरिष्ठ उप प्रधान श्री गोरी शंकर, उप प्रधान श्री विनोद गर्ग, श्री जनेश सिंगला, श्री दविन्द्र सिंगला, आर्य समाज के सदस्यगण एवं आर्य माडल स्कूल का सारा स्टाफ उपस्थित रहा।

विपिन गर्ग प्रिंसीपल

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

पृष्ठ 2 का शेष-आर्यों का मूल निवास स्थान

ऐसी भी है जो आर्यों को विदेशी नहीं मानकर भारतीय ही स्वीकार करती है। इस श्रेणी के विद्वानों की मान्यता है कि आर्य भारत में बाहर से नहीं आए। वे मूल रूप में यहीं रहते थे। डॉ. अविनाशचन्द्र दास, श्री गंगाधर झा, डी.ए. त्रिवेदी, डॉ. सम्पूर्णानन्द, डॉ. राजबलिपाण्डे के नाम उल्लेखनीय हैं। किन्तु वे भारत के विभिन्न प्रदेशों को इस हेतु नियत करते हैं। डॉ. अविनाशचन्द्र सप्त सिन्धु, राजबलि पाण्डेय 'मध्य प्रदेश' डॉ. एस.डी. त्रिवेदी कश्मीर तथा हिमालय प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। डॉ. एस.डी. त्रिवेदी मुल्तान के पास देविका नदी के समीप का प्रदेश तय करते हैं।

भारतीय मत की पुष्टि में निम्न तर्क है-

(1) ऋग्वेद में जिस भौगोलिक स्थिति का वर्णन है वह सप्त सैन्धव प्रदेश में ही मिलती है।

(2) डॉ. अविनाशचन्द्र दास के अनुसार आर्यों की एक शाखा ऐसी थी जो अहुरमज्दा की उपासना करती थी और दूसरी अहिरमन की उपासक थी। कालान्तर में इन दोनों में संघर्ष हुए। अहुरमज्दा की उपासना करने वाले हार कर भागे और ईरान में जाकर बस गए। ईरानियों के धार्मिक ग्रन्थ जिन्द अवेस्था में इसका वर्णन है।

(3) ऋग्वेद में पढ़ने से ज्ञात होता हो कि आर्यों का ज्ञान सप्त सैन्धव तक ही सीमित था। अत: वे यहीं के निवासी थे।

(4) आर्यों ने सप्त सैन्धव को 'दैव कृत योनि' की संज्ञा दी है। इससे स्पष्ट है कि आर्यों का सप्त सैन्धव से अगाध प्रेम था। इसीलिए कहा जा सकता है कि ये प्रदेश ही उनका मूल निवास स्थान था।

(5) वेदों में यत्र-तत्र सप्त सैन्धव का गुणगान भी मिलता है।

(6) डॉ. राजबलि पाण्डेय मध्य प्रदेश वर्तमान उत्तर प्रदेश तथा बिहार प्रदेश को कार्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। अयोध्या प्रतिष्ठान और गया उनके मुख्य केन्द्र थे। वे उत्तरी पश्चिमी दर्रों में से होकर वे ईरान तथा अन्य देशों में पहुंचे।

(7) वेद परवर्ती साहित्य और पुराणों में सुरक्षित परम्पराएं इस बात की साक्ष्य हैं कि आर्य मध्य देश के मूल निवासी थे।

(8) भारतीय साहित्य में कहीं भी इस बात के संकेत नहीं मिलते कि आर्य भारत में बाहर से आए।

(9) भाषा विज्ञान के आधार पर भी भारत ही आर्यों का मूल स्थान ठहरता है क्योंकि आर्य परिवार की भाषाओं में संस्कृत भाषा के शब्द यूरोपीय भाषाओं से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि आर्य भारत के ही निवासी है।

मीमांसा-(1) यदि आर्य भारत के ही निवासी होते तो वे सर्वप्रथम भारत का ही आर्यीकरण करते। ईरान तथा यूरोप न जाकर दक्षिणी भारत में जाने का प्रयास कर वहां अपनी सभ्यता को फैलाने का प्रयास करते।

(2) भाषा के आधार पर भी भारत को आर्यों का निवास नहीं मान सकते क्योंकि सम्पूर्ण दक्षिण आर्यों की भाषा संस्कृत से अप्रभावित है। साथ ही उत्तर के भी कई भाग संस्कृत से अप्रभावित है।

(3) आर्यों के आने से पूर्व उत्तर भारत में द्रविड़ निवास करते थे। इसका साक्ष्य बलूचिस्तान में बोली जाने वाली भाषा 'ब्राहुई' है।

(4) इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में विदेशों से जातियां आई हैं, परन्तु यहां से कोई भी जाति बाहर नहीं गई है। अत: आर्य भी यहाँ बाहर से आये हैं।

(5) प्रो. गाइल्स का कहना है कि वेदों में वर्णित समस्त वनस्पतियां भारत में उपलब्ध नहीं है अत: भारत आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं है।

(6) यदि आर्य भारत के ही निवासी थे तो वे इस उर्वर प्रदेश को छोड़ कर ईरान और यूरोप में क्यों गए।

(7) सिन्धु सभ्यता का वैदिक सभ्यता से अति प्राचीन होना सिद्ध है। सिन्धु प्रदेश में मूल मनुष्यों के गावों के इतिहासकारों ने यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया है कि उनका वध आक्रामक आर्यों ने किया। इससे सिद्ध होता है कि आर्य लोग यहां बाहर से आए हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तिब्बत को आर्यों का मूल निवास माना है। सृष्टि उत्पत्ति के वैज्ञानिक सिद्धांत Big Bang के बाद सृष्टि उत्पत्ति का कार्य प्रारम्भ हुआ। आकाश गंगाएं बनी। सौर परिवार बने। पृथ्वी सूर्य से अलग हुई तब आग का गोला थी। इसमें भी वे सब तत्व है जो सूर्य में है। पृथ्वी धीरे-धीरे ठंडी हुई। इस पर दूध पर जैसे धार जमती है वैसे धरातल बना। फिर लाखों वर्षों तक वर्षा होती रही। सम्पूर्ण पृथ्वी पानी में डूब गई। फिर धीरे-धीरे वर्षा कम हुई। पानी नीचे आने लगा। पर्वतों का निर्माण हुआ। सबसे ऊँचा पर्वत हिमालय सबसे पहिले ऊपर आया। सूखा धरातल बना। फिर इस पर वनस्पतियां पैदा होने लगी। धीरे-धीरे जीवों की उत्पत्ति हुई। सबके अन्त में मनुष्य उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार की स्थिति अफ्रीका में आई। वहां भी सृष्टि की उत्पत्ति हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में प्रश्नोत्तर शैली में इस प्रश्न को इस तरह उठाया-

प्रश्न-मनुष्य की आदि सृष्टि किस स्थान में हुई?

उत्तर-त्रिविष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

प्रश्न-सृष्टि की आदि में एक जाति थी वा अनेक?

उत्तर-एक मनुष्य जाति थी। **पश्चात् विजानीह्यार्थ्यान्ये च दस्यवः।**

यह ऋग्वेद का वचन है। श्रेष्ठों का नाम आर्य विद्वान् वेद और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुये। 'उत शूद्रे उत्तार्ये' वेद वचन। आर्यों में पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम आर्य और मूर्खों का नाम शूद्र और अनार्य अर्थात् अनाड़ी नाम हुआ।

प्रश्न-फिर वे यहां कैसे आए?

उत्तर-जब आर्य और दस्यु में अर्थात् विद्वान् जो देव अविद्वान् जो असुर उनमें सदैव लड़ाई बखेड़ा हुआ, जब बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यही आकर बसें। इसी से इस देश का नाम आर्यावर्त्त हुआ।

प्रश्न-प्रथम इस देश का नाम क्या था और इसमें कौन बसते थे?

उत्तर-इससे पूर्व इस देश का कोई भी नाम नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सीधे इसी देश में आकर बसे थे।

प्रश्न-कोई कहते हैं कि ये लोग ईरान से आए थे। इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ। इनके पूर्व यहां जंगली लोग बसते थे कि जिनको असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे। उनका जब संग्राम हुआ उसका नाम कथाओं में देवासुर संग्राम ठहराया।

उत्तर-यह बात सर्वथा झूठ है। क्योंकि-

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रताम्।
उत शूद्रे उतार्ये।। ऋ. 1.51.8

यह लिख चुके हैं कि आर्य नाम धार्मिक विद्वान् आप्त पुरूषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्र का नाम अनार्य अर्थात् अनाड़ी है।

जब वेद ऐसे कहता है तो दूसरें विदेशियों के कपोल कल्पित को बुद्धिमान् लोग कभी नहीं मान सकते। देवासुर संग्राम में आर्यावर्तीय अर्जुन तथा महाराज दशरथ आदि हिमालय पहाड़ में आर्य और दस्यु, म्लेच्छ असुरों का जो युद्ध हुआ था। उसमें देव अर्थात् आर्यों की रक्षा और असुरों के पराजय करने को सहायक हुए थे। इससे यही सिद्ध होता है कि आर्यावर्त्त के बाहर चारों ओर जो हिमालय के पूर्व आग्नेय, दक्षिणा नैर्ऋत, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान देश में मनुष्य रहते हैं उन्हीं का नाम असुर सिद्ध होता है। किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आए है। यहां के जंगलियों से लड़कर, जय करके, निकालके इस देश के राजा हुए। पुन: विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।

श्री प्रेम भिक्षु के अनुसार इस देश का नाम आर्यावर्त आर्यों के कारण ही है। यदि आर्य बाहर से आए थे तो पूर्व में इस देश का नाम क्या था? भारत के आदिवासियों की किसी भी पुस्तक में अथवा लोक कथा में भी यह वर्णन नहीं है कि आर्यों ने इन्हें हराकर जंगल में भगा दिया अभी कुछ शिक्षित द्रविड़ों ने अपना कुछ इतिहास लिखा है वह भी अगस्तय व कर्ण ऋषि से प्रारम्भ किया है। यदि द्रविड़ आर्यों के पूर्व यहां रहते थे तथा आर्यों ने उन्हें दक्षिण में भगा दिया तो दक्षिण में चन्दन तथा कपूर दो पदार्थ अधिक है। इनका नाम उनकी भाषा में क्या है? आर्यों के तीर्थ मध्य एशिया में कहां पर हैं? भारतीय आर्यों की एक शाखा ईरानी है। वहां के भूगोल में पढ़ाया जाता है, कि कुछ हजार वर्ष पूर्व आर्य लोग हिमालय पर्वत से उतर कर यहां आए और यहां का जलवायु अपने अनुकूल पाकर ईरान में बस गए। स्वामी दयानन्द के अनुसार आर्य लोग तिब्बत से उत्तर कर सप्त सिन्धु में बस गए। आर्य लोग आज भी मानसरोवर को तीर्थ मानते हैं। मानसरोवर के उत्तर में यमपुर था जहां यमराज शासन करते थे। यही कुबेर की राजधानी अलकापुरी थी। कैलाश पर्वत के उत्तर में अमरावती थी जहां का शासक इन्द्र था। संस्कृत के ग्रन्थों में इनका विस्तृत वर्णन है। तिब्बत में आज भी रूद्रोक नगर अनाज की बड़ी मण्डी है। रूद्र सूर्य के भाई थे और ल्हासा का अर्थ ही देवताओं की नगरी है। तिब्बत में आज भी बुद्ध धर्मावलम्बी आर्य लोग रहते हैं। सम्पूर्ण विवरण से सिद्ध होता है कि आर्य आर्यावर्त के असली निवासी है। स्वामी दयानन्द की मान्यता का जर्मन विद्वान् पांट और म्यूर ने भी समर्थन किया है।

मैक्समूलर ने भी स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य को पढ़ने के बाद मध्य एशिया की मान्यता से हट कर कह दिया था कि कहीं एशिया में ही और तिब्बत एशिया ही भाग है। इतिशम्।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

सोमवार 3 मई 2021 को प्रातः 9.00 बजे करें ''रोग निवारण यज्ञ''

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते।

आप सभी जानते ही है कि सम्पूर्ण विश्व आज एक वैश्विक महामारी कोरोना से जूझ रहा है। दिन प्रतिदिन नये-नये वेरियंट और नये-नये स्ट्रेन आ रहे हैं और इस महामारी को और अधिक भयंकर रूप दे रहे हैं। मानव समाज की भलाई के लिये हमारे वैज्ञानिक जहां इसके लिये वैक्सीन बना रहे हैं वहां हमारे वैदिक विद्वान यज्ञ के माध्यम से कोविड के इन विषाणुओं के अंत और महामारी के प्रभाव को कम करने के लिये प्रयासरत हैं। गत वर्ष 3 मई को सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों द्वारा एक साथ एक ही समय यज्ञ का आयोजन किया गया था जिसमें हजारों आर्यजनों ने एक साथ औषधियुक्त आहुतियां यज्ञ में समर्पित करते हुये रोगमुक्त विश्व की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की थी।

सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने निर्णय लिया है कि 3 मई को अंतर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस का आयोजन किया जाये और विभिन्न औषधीय युक्त सामग्री के साथ '**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया**' की भावना के साथ यज्ञ किया जाये।

अतः आप सबसे निवेदन है कि सम्पूर्ण विश्व में महामारी के कारण सरकार द्वारा लगाये गये शासकीय बंदिशों एवं दिशा-निर्देशों का पालन करते हुये अपने अपने स्थान, घरों, दुकानों, आर्य समाजों, गुरूकुलों, विद्यालयों, प्रतिष्ठानों, छात्रावासों, आवासीय सोसायटियों जहां भी आप रह रहे हों, सेवा कर रहे हों, वहां अपने परिवार/सहयोगियों के साथ **3 मई 2021 को प्रातः 9.00 बजे रोग निवारण यज्ञ** का अवश्य ही आयोजन करें और वैदिक मंत्रों का गुंजायमान करते हुये आध्यात्मिक तरंगों और औषधियुक्त धूम्र से संसार को कष्ट प्रदान करने वाले विषाणुओं को समाप्त करने में सहयोगी बनें और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार करें।

आप से यह भी निवेदन है कि आप अपने स्थान पर किये गये यज्ञ की फोटो एवं छोटे छोटे वीडियो क्लिप बना कर **89681-41104** एवं **99886-23108** पर भेज दें ताकि उसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के व्हाटसअप ग्रुप, फेसबुक पेज पर डाला जाए तथा आर्य मर्यादा साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाये।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,

सुदर्शन शर्मा	**प्रेम कुमार**
प्रधान	महामंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब	आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज मंदिर, पुतलीघर अमृतसर में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर, पुतलीघर अमृतसर में आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री इन्द्रजीत ठुकराल एवं महामंत्री श्री पंडित मुरारी लाल आर्य जी एवं अन्य हवन यज्ञ करते हुये जबकि चित्र दो में श्री रोहित देव धवन एवं श्रीमती शगुन धवन और श्री राहुल देव धवन और श्रीमती शैलजा धवन को गायत्री मंत्र का चित्र देकर सम्मानित किया गया।

आर्य समाज मंदिर, पुतलीघर अमृतसर में दिनांक 13 अप्रैल 2021 दिन मंगलवार को प्रधान श्री इन्द्रजीत ठुकराल की अध्यक्षता में विक्रमी सम्वतसर नववर्ष 2078, आर्य समाज स्थापना दिवस एवं वैसाखी पर्व बड़ी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रातः 8.00 बजे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यजमान श्री देवेन्द्र गुप्ता जी, श्रीमती वन्दना, श्री एम.एम. सीकरी, श्रीमती सीकरी, श्री सुधीर ठुकराल, श्रीमती रन्जू ठुकराल एवं श्रीमती रमेश रानी ठुकराल ने श्रद्धापूर्वक वेदवाणी कल्याणी के मंत्रों द्वारा एवं नव सम्वतसर की विशेष आहुतियां प्रदान करके यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ की प्रक्रिया पंडित मुरारी लाल आर्य के द्वारा सम्पन्न कराई गई। श्री प्रेम प्रकाश जी प्रेम एवं श्री नरेन्द्र पाल जी पंछी ने ऋषि महिमा एवं प्रभु भक्ति के मधुर भजन गाकर उपस्थित आर्य बन्धुओं को मंत्रमुग्ध किया। पंडित मुरारी लाल जी आर्य ने ऋषि के उपकार एवं आर्य समाज की उपलब्धियों के बारे में, नवसम्वतसर 2078 के साथ सृष्टि सम्वतसर 1960853122 पर भी विचार प्रस्तुत किये। पंडित मुरारी लाल आर्य ने कहा कि इसी दिन भारत वर्ष को नई दिशा देने वाली संस्था आर्य समाज की स्थापना महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर-कमलों द्वारा बम्बई में की गई थी। आर्य समाज वेदों का प्रचार-प्रसार करने की प्रमुख संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य वेद और सत्य सिद्धान्तों का प्रचार करना है। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य का जीवन आर्य समाज की विचारधारा के अनुकूल होना चाहिए और इसके लिए उसे स्वाध्यायशील होना जरूरी है। आर्य समाज के आरम्भिक काल में आर्य समाज के सदस्य स्वाध्याय-शील, विचारशील व वैदिक सिद्धान्तों पर चलने वाले हुआ करते थे। दुर्भाग्य से आज यह प्रचार भावना आर्य समाज के सदस्यों में कम हो रही है। हमारे साप्ताहिक सत्संग अपने तक ही सीमित हो गए हैं। दूसरे लोग तो क्या आर्य समाज के सदस्यों के बच्चे भी सत्संग में नहीं जाते । स्वाध्याय हमारे जीवन का अंग नहीं रहा। वेद हमारे घरों में नहीं हैं। जब हम वेदों को, महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को और अन्य साहित्य को स्वयं नहीं पढ़ेंगे तो दूसरों को पढ़ने-पढ़ाने की क्या प्रेरणा करेंगे। इसलिए आज हमें आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाने पर बल देना चाहिए, वेदों का स्वाध्याय करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। आज हमें विचार करने की आवश्यकता है कि क्या हम उस परम धर्म का पालन कर रहे हैं या नहीं। ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिये कहा कि मुमकिन है कि गिने जाएं सहरा के जर्रे, समुन्द्र के कतरे, फलक के सितारे, पर यह ना मुमकिन है ऋषिवर गिने जाएं अहसां तुम्हारे।

साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित होने पर नवदम्पत्ति श्री रोहित देव धवन, श्रीमती शगुन धवन, श्री राहुल देव धवन, श्रीमती शैलजा धवन जी को उत्तरीय एवं गायत्री मंत्र चित्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रिंसीपल श्री सुशील लुथरा जी, श्री विजय कुमार जी, श्रीमती सुदेश जी, श्री दीपक बब्बर जी, कुमारी काजल, कुमार गौत्तम सागर, प्रणव एवं शिवानी एवं श्रीमती ज्योति जी भी उपस्थित हुये। अंत में शान्ति पाठ के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया।

-पंडित मुरारी लाल आर्य

स्वामित्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**